४६: समाज में पूर्णता-४: सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप

दिनांक -२७/१२/२०११

समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक हर मानव परिवार, मानव चेतना पूर्वक अथवा विकसित चेतना पूर्वक जीने के रूप में प्रमाणित होता है | ऐसी विकसित चेतना विकल्पात्मक शिक्षा विधि से ही उपयोगी अर्थात शिक्षा विधि से सर्व सुलभ हो पाएगी | अभी तक के दोनों विचार १-आदर्शवादी विचार २-भौतिकवादी विचार दोनों में प्रचलित हुआ-हमारा सोच ऐसा है | प्रकारांतर से सभी देशों में आदर्शवाद आदिकाल से रहा है | आदिकाल का मतलब, मानव का प्रकटन होने के बाद से है | धीरे धीरे वह समुदायवाद के रूप में प्रकाशित हो गया | उसी के साथ साथ व्यक्तिवाद बना रहा | इस प्रकार व्यक्तिवाद, समुदायवाद के चलते देश व राज्य का नामकरण हुआ | हर देश, राज्य की सीमा की सुरक्षा की बात सोची जाती है | उसके लिये समुचित प्रबंधन किया जाता है | इसमें लगने वाली सभी शक्तियां सामान्य लोगों का होता है | सामान्य लोग किसी न किसी परिवार से होते हैं | विशेष लोग भी होते हैं | इस विधि से मानव का विकास विधि समीचीन होना अथवा प्रकटन होना मानव जात मानता है | इतिहास के अनुसार यही समझ में आता है | इस क्रम में अंतिम कड़ी अत्याधुनिक युग ही है | अत्याधुनिक युग को विज्ञान युग भी कहा जाता है | ऐसे क्रम में सकारात्मक उपलब्धि केवल दूरसंचार ही हुआ | इसमें लगने वाली श्रमशीलता सामान्य जन मानस में स्वीकार हुआ |

श्रमशीलता किसी न किसी विधि से प्राकृतिक ऐश्वर्य पर ही नियोजित होता है | इसका परिणाम स्वरूप में सकारात्मक, नकारात्मक उपलब्धियां होते हैं | जैसा घर बनाना, घर बिगाड़ना, यंत्र बनाना, यंत्र को कबाड़ा में बदल देना | सब में श्रम लगता ही है | यंत्र बनाना स्वीकार होता है-बनाने वाले को, देखने वाले को | कबाड़ा बनाना स्वीकार नहीं होता है | यह मानव से बनने वाली सकारात्मक, नकारात्मक परिणाम ही है | इसी क्रम में मानव में अपराध प्रवृत्तियां नकारात्मक स्वीकार होता है | इसे यंत्रणात्मक विधि से समाधानित करने के लिये प्रयत्न करते ही हैं | यंत्रणा समाधान का आधार नहीं हो पाता | यंत्रणा पुनः अपराध के लिये प्रेरित होता है | इसे सर्वाधिक रूप में परीक्षण किया जा सकता है | इस क्रम में मानव में जितना भी प्रयास है, अपराध मुक्ति के लिये यंत्रणा ही हुई है | इसे इतिहास के अनुसार अत्याधुनिक युग से प्राचीन, अर्वाचीन युग तक के कथनों से भी पहचाना जा सकता है | अर्वाचीन युग से ही परोपकार की प्रवृत्तियां भी साथ में गण्य होती हैं | प्रवृत्तियां चाहत के रूप में होते हैं | उपकार की बात अभी तक सुनिश्चित नहीं हो पाई |

उपकार एक शब्द है, शब्द के अर्थ में जाएँगे तो उपाय से किये गये कृतियाँ है | कृतियों का तात्पर्य है, कार्य प्रवृत्तियों से किया गया कार्य स्वरूप | इसमें हस्त कला से लेकर स्थापत्य और मूर्ति कला तक सम्पन्न हो पाता है | इन सभी में श्रम नियोजन होता है | घर बनाने में, मूर्तियों को गढने में, लिखने में, हस्त कला में, ग्राम शिल्प में, कुटीर उद्योग में किये जाने वाले कार्कलाप के रूप में गण्य होता है | इसी क्रम में गांव, शहर, देशों का कल्पना भी होता है | इसे और आगे बढाना ही विकास है अथवा विकसित चेतना है | विकसित चेतना विधि से देखने पर अभी तक का सकारात्मक भाग यथा अत्याधुनिक युग में पाये जाने वाले दूरसंचार तथा उसके पहले से श्रम नियोजन पूर्वक आहार, आवास, अलंकार सम्बन्धी कार्य, वस्तु, उपयोग, प्रयोजन स्वीकार्य हुआ है | इसे बनाये रखते हुए समझदारी के अर्थ में उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनीय बनाना ही मतलब है | इसके लिये

विकल्प विधि ही समझ में आता है | विकसित चेतना ही विकल्प है | विकसित चेतना में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना समायी रहती है अर्थात मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में जीने की विधि समायी रहती है | यही विभिन्न स्थितियों में कार्य विधि है | यही संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के रूप में गण्य हो पाता है न कि अट्टालिका, गाड़ी, घोड़ा, सड़क, वाहन, परिवहन, यान वाहन ही केवल उपलब्धियां हैं | यह सभी दूरसंचार के रूप में गण्य हैं | ये सब व्यापार के अर्थ में लगी हुई हैं | व्यापार स्वयं लाभोन्माद में ग्रसित है | इन सब तथ्यों को ध्यान में रख कर यदि हम सोच पाते हैं तो अखण्ड समाज का कल्पना आता है | सर्वदेश काल में एक प्रकार का संस्कृति अर्थात पूर्णता के अर्थ में की गयी कृतियों के रूप में प्रमाणित होता है क्योंकि सह-अस्तित्व ही अंतिम रूप में समझ में आता है विकसित चेतना विधि से | ऐसी विकसित चेतना चारों अवस्थाओं के साथ परस्पर पूरकता पूर्वक जीने के अर्थ में होता है जिसमें संघर्ष एवं युद्ध का कोई स्थान नहीं है |

फलस्वरूप वर्तमान में विश्वासपूर्वक मानव जी पाता है | अत्याधुनिक युग में विज्ञान का पैगाम के अनुसार वर्तमान होता ही नहीं, इसको भली प्रकार से प्रचलित कर चुके हैं | जो कुछ भी होता है भूत और भविष्य में होता है; वर्तमान का मतलब ही समाप्त हो गया है | जबकि वर्तमान के बिना पहचान होता ही नही | इसे परमाणु अंश से लेकर विकसित मानव तक निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण किया जा सकता है | इसका अधिकार सर्वमानव में समाहित है | इस क्रम में मानव वैभव को निश्चितकर पाता है | प्रलय मनुष्य को स्वीकार नहीं है | उद्भव, विभव में, से विभव सर्वाधिक स्वीकार है, सदा के लिये स्वीकार है | यह विकसित चेतना विधि से ही, जीवन का अमरत्व के आधार पर सफल होने की व्यवस्था है | जीवन के अमरत्व को पहचानना ही विकसित चेतना का पहला सफलता है | सहअस्तित्व एवं जीवन के अमरत्व के आधार पर नियमों की स्वीकृति, संबंधों की स्वीकृति होता है जो स्वयं न्याय स्वरूप है | दूसरा सफलता अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहचानना | यह सत्य ज्ञान से हो जाता है | यही दो प्रधान मुद्दा विकसित चेतना का देन है | इसी क्रम में हर परिवार में समाधान, समृद्धि का प्रमाण होता है | व्यक्ति में समाधान, परिवार में समाधान, समृद्धि यह दोनों मुद्दा सामान्य रूप में सभी परिवारों में प्रमाणित हो पाता है | यह विकसित चेतना का महिमा है | इस क्रम में चलता हुआ परिवार ही अखण्ड समाज का आवश्यकता को स्वीकारता है | अखण्ड समाज स्वीकृति, मानसिकता विधि से ही अखण्ड समाज व्यवस्था होना स्वाभाविक है | इस ढंग से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रुपी व्यवस्था साकार होना ही विकसित चेतना सहज विधि से जीता हुआ मानव परम्परा का वैभव है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज